ORIGINAL RESEARCH PAPER

Commerce

ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा एवं प्रासंगिकता

KEY WORDS:

अजिता कुमारी शोधार्थी, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

वैश्विक–स्तर पर भारत की पहचान एक ग्रामीण एवं कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाले ऐसे शांतिप्रिय देश की है जो ऐतिहासिक निरन्तरता के साथ–साथ पर्यटकों को आकर्षित करने वाली साथी प्रमुख विरासतों से भरपूर है। इनमें हिमालयी बर्फ से लेकर कन्याकुमारी के त्रिसागरों तक, राजस्थान के मरूस्थल एवं किलों–महलों से लेकर असम की ब्रह्मपुत्रा एवं पूर्वोत्तर की जनजातियों तक तथा दिल्ली–मुम्बई की चकाचौंध से लेकर सांची के शांत बौद्धस्तूपों तक पर्यटन स्थलों की एक अंतहीन श्रृंखला विद्यमान है। यह भारत का सौभाग्य है कि न तो ईश्वर ने इसे प्राकृतिक सौन्दर्य प्रदान करने में कोई कमी रखी और न ही इतिहास के पन्नो में दर्ज शासकों ने कोई कसर बाकी रखी। सभ्यता एवं संस्कृति का ऐसा सुन्दर संगम शायद ही अन्यत्रा कहीं देखने को मिले।

पर्यटन वह मानवीय गतिविधि है जिसमें विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा मानवीय कारणों से व्यक्ति एक से दूसरे स्थान की यात्राा करता है तथा ज्ञान, मनोरंजन, स्वास्थ्य, धन, सुख तथा आनन्द की प्राप्ति करता है। पर्यटन को उसके आकार, उद्देश्य, स्थान तथा क्षेत्रा की दृष्टि से कई स्वरूपों में विभक्त किया जाता है। धार्मिक पर्यटन, वन्य पर्यटन, मरूस्थल पर्यटन, रोमांचकारी पर्यटन, मरूस्थल पर्यटन, नौ– पर्यटन, आदिवासी पर्यटन, प्राकृतिक (पारिस्थितिकीय) पर्यटन, पर्वतीय पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, वाणिज्य पर्यटन, तीर्थाटन पर्यटन, सभा–सम्मेलन पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, खरीदारी पर्यटन तथा ग्रामीण पर्यटन इत्यादि स्वरूपों में पर्यटन हमारे सामने आता है।

ग्रामीण पर्यटन से तात्पर्य शहरी चकाचौंध से दूर प्राकृतिक परिवेश में रचे–बसे गांवो में घूमने तथा वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति से रूबरू होना है। भारत को वैश्विक–स्तर पर गांवों का देश माना जाता है क्योंकि 6 लाख से अधिक गांव न केवल हमारी अर्थव्यवस्था बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक पूंजी भी हैं। शहरो में स्थित मंदिरों, झीलों और राजा – महाराजाओं के महल किलों के अलावा शेष सभी वे चीजें गांवों में ही विद्यमान हैं जो एक पर्यटक को आकर्षित करती है। ग्रामीण पर्यटन के मुख्य आकर्षण इस प्रकार हैं:

- पर्वत, घाटी, वन, नदी, तालाब, झील, बावड़ी एवं दरिया
- धार्मिक स्थल
- ग्रामीण खेलकुद तथा रोमांचकारी गतिविधियां
- प्राकृतिक सौन्दर्य
- कृषि, सिंचाई एवे बागवानी आकर्षण
- हस्तकला एवं लघु उद्ययोग
- पशुधन तथा वन्य जीव
- अभ्यारण्य एवं राष्ट्रीय पार्क
- चौपाल, पंचायत, नुक्कड़ तथा सभाएं
- ग्रामीण व्यंजन एवं भोज
- पहनावा साज–श्रृंगार तथा निवास
- जानवरों पर बैठ कर सवारी
- योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा
- जादू इत्यादि।

ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा

भारत अपनी रंग–बिरंगी विविधताओं के कारण हमेशा से ही पर्यटकों का पसंदीदा स्थान रहा हैं। झरनों व नदियों से भरपूर प्राकृतिक खूबसूरती, अनेक तरह के पारंपरिक मेलों, खूबसूरत सामानों से सजे बाजार, विभिन्न मसालों से महकते भोजन , सदियों का इतिहास बताती ऐतिहासिक इमारतें, कहीं नदी का किनारा तो कहीं समुद्र की लहरें आदि अनेक ऐसे खूबसूरत पहलू हैं जो सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पर्यटन की दृष्टि से भारत के पास विशाल प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति है। भारत के मनोरम दृश्यों की प्रशंसा करते हुए मैक्स मुलर ने कहा कि यदि हमे संपूर्ण विश्व में किसी ऐसे देश कि खोज करनी हो जिसमें प्रकृति की सर्वाधिक संपदा, शक्ति और सौंदर्य निहित हो और जिसके कुछ भाग तो वस्तुतः धरती पर स्वर्ग हों तो मैं भारत का नाम लूंगा। मैक्स मुलर के शब्द यह प्रदर्शित करते हैं कि भारत के पास वह अद्भूत खजाना है जो शायद किसी अन्य देश के पास होना मुश्किल है। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि इस अद्भूत विशेषता को आपनी शक्ति संवर्धन के रूप में बढ़ावा दें।

प्राचीन भारत में ग्रामीण पर्यटन के बहुत से उदाहदण उपलब्ध हैं। जब भगवान राम 14 वर्षो तक विविध स्थानों पर घूमते रहे, इसी प्रकार पांडवों ने भी अज्ञातवास के काल में विभन्न स्थानों का भ्रमण किया। महावीर तथा गौतम बुद्ध ने भी विभिन्न गांवों में भ्रमण किया। भारतीय परंपरा में तीर्थाटन का अपना महत्व है, पर्यटन की दृष्टि से यह भी ग्रामीण पर्यटन का अतीत बेहद समृद्ध रहा है।

आधुनिक काल में ग्रामीण पर्यटन का इतिहास 18वीं शताब्दी से प्रारंभ होता है। शार्पले और शार्पले के अनुसार यह ग्रामीण पर्यटन 18वीं शताब्दी के बाद यूरोप में जाने–पहचाने कियाकलाप के रूप में लोकप्रिय हुआ। थामस कुक ने 1863 में स्विट्जरलैंड के ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार का पहला पर्यटन अभियान आरंभ किया । तत्पश्चात इस उद्योग में अत्यधिक वृद्धि हुई । 20वीं शाताब्दी से ग्रामीण पर्यटन समस्त देशों में बढ़ता चला गया। 1990 के बाद भारत में धीरे–धीरे इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई।

ग्रामीण पर्यटन के विभिन्न प्रकार

देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए केंद्र सरकार ने कुछ ऐसे प्रयोग किए हैं जो सफल साबित हुए हैं जिसमें गांवों में दर्शनीय नए स्थलों का विकास और उन्हें आकर्षक बनाने के लिए विशेष प्रकार के निर्माण और उनका बेहतर तरीके से रख रखाव, अतुल्य भारत बेड और ब्रेकफास्ट होम स्टे योजना को आगे बढ़ाना, चिकित्सा पर्यटन और फिल्म पर्यटन को अधिकाधिक बढ़ावा देकर पर्यटन को सबसे लाभकारी उद्योग के रूप में विकसित करना सम्मिलित है।

भारत के गांव हमेशा से अपनी लोककलाओं और हस्तशिल्पों के लिए विख्यात रहे हैं । यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्रकृति के सान्निध्य में खुला वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर खींचने के लिए पर्याप्त है। यही सब कारक भारत में ग्रामीण पर्यटन को विपुल संभावनाओं वाला क्षेत्रा बना देते हैं। भारत में ग्रामीण पर्यटन के प्रमुख प्रकार हैं:

कृषि पर्यटनः कृषि उधोग और फसलें उगाने के लिए किसान कैसे काम करते हैं, के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना।

संस्कृति पर्यटनः पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति विषयक गतिविधियों जैसे अनुष्ठानों और उत्सवों में हिस्सा लेने का अवसर प्रदान करना।

प्रकृति पर्यटनः ऐसे प्राकृतिक स्थलों की जिम्मेदारी के साथ यात्राा करना, जो पर्यावरण का संरक्षण करते हैं और स्थानीय लोगों के कल्याण में सुधार लाते हैं।

साहसिक पर्यटनः कोई भी ऐसी रचनात्मक गतिविधि साहसिक पर्यटन के अंतर्गत शामिल है, जो किसी व्यक्ति की क्षमता ओर अंतिम सीमा तक उसकी तैयारी का परीक्षण करने का अवसर प्रदान करती है।

भोजन पर्यटनः जहां पर्यटकों को हमारे व्यंजनों की विविधता का आनंद लेने का अवसर मिलता है। इस तरह का पर्यटन भोजन और विभिन्न स्थानों के प्रमुख भोजनों की जानकारी प्राप्त करने में मदद करता है।

समुदाय पारिस्थितिकी पर्यटनः यह ऐसा पर्यटन है, जो किसी उद्देश्य के लिए किया जाता है। यह वास्तव में ऐसे प्राकृतिक स्थलों की जिम्मेदारीपूर्ण यात्राा है, जो पर्यावरण संरक्षण करते हैं और स्थानीय लोगों की खुशहाली में सुधार लाते हैं।

नृजातीय पर्यटनः इसका उद्देश्य विभिन्न संस्कृतियों के क्षितिजों का विस्तार करना है। इसका अनिवार्य लक्ष्य विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक जीवनशैलियों और विश्वासों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है।

ग्रामीण पर्यटन की अहमियत

- 2011 की जनगणना के शुरूआती नतीजों पर रजिस्ट्रार जनरल और सेंसस कमिश्नर की ओर से पेश ब्यौरे के मुताबिक
- 121 करोड़ की कुल आबादी में 83.3 करोड़ यानी 68.84 फीसदी गांवों में रहती थीः
- लेकिन कुल आबादी मे ग्रामीण आबादी की हिस्सेदारी 2001 के 72.19 फीसदी से घटकर 68.84 हो गई।
- वहीं दूसरी ओर शहरीकरण का स्तर 27.81 फीसदी से बढ़कर 31.16 फीसदी हो गया।

मतलब साफ है कि गांवों मे अभी भी बड़ी आबादी रहती है, लेकिन उनके लिए जीविका के साधन सीमित होते जा रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि बस किसानी पर जीविका चलाना आसान नहीं। अब ऐसे में क्या कुछ ऐसे किया जाए जिससे गांव, गांव रह सके और गांव वालों के लिए अच्छी आमदनी का इंतजाम हो सके। और ये मुमकिन हो सकता है ग्रामीण पर्यटन के जरिए। गौर करने की बात ये है कि पर्यटन बड़े पैमाने पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के मौके मुहैया कराता है।

ग्रामीण परिवेश जहां आपको प्रकृति के काफी करीब ले जाता है, वहीं आप सभ्यता–संस्कृति के विभिन्न रंग, परम्पराओं और हस्तकला–हस्तशिल्प से सीधे–सीधे रू–ब–रू होते हैं। और हां, यदि आप रोमांच के शौकीन हैं तो देश के कई ग्रामीण इलाके आपका स्वागत करने के लिए तैयार हैं। एक बात और, यदि आध्यात्म के लिए आना चाहें तो उसके लिए भी कई विकल्प मौजूद हैं। सच पूछिए तो भारत की वास्तविक तस्वीर देखनी है तो शहरों के बजाए गांवों में आपको जाना चाहिए। पर्यटन विभाग ने ऐसे विभिन्न गंतव्यों की सूची तैयार कर रखी है, जहां आप अपनी रूचि के हिसाब से पर्यटन के लिए जा सकते हैं

भारत के पर्यटन मंत्रालय ने ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए योजनाओं का निर्माण किया है और कई फैसले लिए हैं। **स्वदेश दर्शन योजना** के तहत 13 परिपथ वर्ष 2016 में तय किए गए जिनमें से कई सीधे तौर पर ग्रामीण पर्यटन से जुड़े हैं जैसे ग्रामीण परिपथ, जनजातीय परिपथ, पूर्वोत्तर भारत परिपथ इत्यादि।

सरकार ने ग्रामीण पर्यटन को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के साथ साझेदारी में लांच किया था। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने वाली योजना में कुछ गतिविधियो कों शामिल किया गया है, जो निम्नलिखित हैं–

- गांव के परिवेश में सुधार। बागवानी जैसी गतिविधियों पार्को के विकास, बाड़ लगाना, यौगिक दीवार आदि के द्वारा ऐसा होगा;
- पंचायत की सीमाओं के भीतर सड़कों में सुधार, इसमें गांव को जोड़ने वाली प्रमुख सड़क शामिल नहीं होगी;
- गांव में प्रदीप्ति ;
- ठोस अपशिष्ट प्रवंधन में सुधार और सीवरेज प्रबंधन;
- पथ के आसपास सुविधा निर्माण;
- सीधे पर्यटन से संबंधित उपकरणों की खरीद जैसे पानी के खेल, साहसिक खेल,

पर्यावरण के अनुकूल तरीके, पर्यटन क्षेत्रा में जाने के लिए परिवहन;
- स्मारकों का नवीनीकरण एवं सौदर्यीकरण;
- चिहिन्त करना;
- स्वागत इत्यादि।

निष्कर्ष

एक समय था जब पर्यटन मन बहलाव और पुण्य कमाने की इच्छा को पूरा करने का साधन था। जिन अन्य उद्देश्यों से पर्यटन पर निकलने की परंपरा रही है उनमें रोजगार, व्यापार और ज्ञान अर्जन शामिल हैं। इस प्रकार पर्यटन मुख्यतया व्यक्तिगत गतिविधि थी। किंतु समय बीतने के साथ पर्यटन सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक के साथ–साथ आर्थिक गतिविधि का रूप ग्रहण कर चुका है। यही कारण है कि पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया हैं लोगों को रोजगार देने तथा विदेशी मुद्रा के अर्जन की दृष्टि से भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन का प्रमुख स्थान है।

चूकि भारत गांवों का देश है, इसलिए भारत की सांस्कृतिक धरोहरों का अधिकांश ग्रामीण क्षेत्राों से ही जुड़ा है। इस नाते भारत की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। जैसा कि नाम से ही झलकता है, जिसके माध्यम से पर्यटन उद्योग उस व्यवस्था को कहा जाता है जिसके माध्यम से पर्यटको को ग्रामीण जीवन–शैली, कला–संस्कृति, अर्थव्यवस्था, ग्रामीण अंचलों की धरोहर आदि से रूबरू होने का अवसर मिलता हैं। इन अवसर को प्रदान करने अथवा उन तक पहुंचने में सहायता प्रदान करने वाले व्यक्तियों/संस्थाओं को इस सेवा के बदले आय की प्राप्ति होती है।

अंततः भारत विविधताओं का देश है। मौसम, रंग–रूप, पहनावे, संस्कृति और धर्मों की इतनी विविधता विश्व में विरले ही देखने को मिलती हैं इसीलिए भारत को 'पर्यटकों का स्वर्ग' कहा जाता हैं पर्यटन हमारे देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा और राजस्व–अर्जन का महत्वपूर्ण स्रोत है। इस क्षेत्रा की असीम क्षमता के कारण बारहवीं पंचवर्षीय योजना में इसे प्राथमिक क्षेत्रा का दर्जा दिया गया है। हाल के वर्षो में देश में ग्रामीण पर्यटन की ओर भी यथोचित ध्यान दिया जा रहा है। इसके तहत ग्रामीण पर्यटन को ग्रामीण विकास की रणनीति के रूप मे अपनाया गया है। भारत सरकार के कुछ नए कदम ग्रामीण पर्यटन को वैश्विक फलक पर स्थापित करने का दमखम रखते हैं।

सन्दर्भ :

1. कटारिया, सुरेन्द्र (2016), राष्ट्रीय जुड़ाव में ग्रामीण पर्यटन का योगदान, कुरूक्षेत्रा, वर्ष 62, अंक 4, फरवरी, पृष्ठ 42–43
2. सक्सेना, ऋषभ कृष्णा (2017), राष्ट्रीय पर्यटन नीति और ग्रामीण पर्यटन, कुरूक्षेत्रा, वर्ष 64, अंक 2, दिसम्बर, पृष्ठ 16
3. भारत पर्यटन सांख्यिकी पर एक नजर 2017
4. शर्मा, कंचन (2015), भारत में पर्यटन विकास : चुनौतियां व संभावनाएं, योजना, वर्ष 59, अंक 5, मई, पृष्ठ 21
5. आर्येन्दु, अखिलेश (2015), ग्रामीण पर्यटन के बढ़ते कदम कुरूक्षेत्रा, वर्ष 61, अंक 8 जून, पृष्ठ 34
6. द्विवेदी, धीप्रज्ञ (2015), पर्यावरण, पारिस्थितिकी और पर्यटन, योजना, वर्ष 59, अंक 5, मई, पृष्ठ 30–31
7. ूण्बमदेनेपदकपंण्हवअण्पद